अथामलक्या नामानि गुणाँश्चाह

वयस्यामलकी वृष्या जातीफलरसं शिवम् । धात्रीफलं श्रीफलं च तथामृतफलं स्मृतम् ॥
त्रिष्वामलकमाख्यातं धात्री तिष्यफलाऽमृता ॥ ३८ ॥
हरीतकीसमं धात्रीफलं किन्तु विशेषतः । रक्तपित्तप्रमेहघ्नं परं वृष्यं रसायनम् ॥ ३९ ॥
हन्ति वातं तदम्लत्वात्पित्तं माधुर्यशैत्यतः । कफं रूक्षकषायत्वात्फलं धात्र्यास्त्रिदोषजित् ॥४०॥
यस्य यस्य फलस्येह वीर्यं भवति यादृशम् । तस्य तस्यैव वीर्येण मज्जानमपि निर्दिशेत् ॥४१॥

आंवले के नाम तथा गुण—वयस्या, आमलकी, वृष्या, जातीफलरसा, शिव, धात्रीफल, श्रीफल और अमृत फल ये सब आंवले के नाम हैं। आमलक (यह शब्द तीनों लिङ्गों में होता है), धात्री, तिष्यफला, अमृता ये भी आंवले के संस्कृत नाम हैं। हरड़ के जो २ गुण हैं, वे ही आंवले के भी हैं। किन्तु विशेष यह है कि—यह रक्तपित्त तथा प्रमेह का नाशक है और अत्यन्त वृष्य (वीर्य के लिये हितकर) एवं रसायन है। **आमला**—अम्ल रस युक्त होने से वायु को तथा मधुर रस युक्त और शीतल होने से पित्त को दूर करता है और रूक्ष तथा कषाय रस युक्त होने से कफ को दूर करता है। अतएव यह त्रिदोशनाशक है। यहां सर्वत्र यह समझना चाहिये कि जिन २ फलों का गुण जैसा उष्ण या शीतवीर्य हो उन २ फलों की मींगी का भी गुण वैसा ही उष्ण या शीतवीर्य होता है ३८-४१ ॥

३ आमला

हि०-आमला, आँवला, आंवडा, आंवरा, औड़ा, औरा। ब०-आमला, आमरो, अमला, आमलकी। म०-आवले, आवलो, आवलकाठी। प०-आमला, अम्बुल, अम्बलो। मा०-आंबला। गु०-आंबला,

आमला, आमली। **क०**–नेलि, नेलिकायि। **ते०**–उसरिकाय, उसरिक। **उ०**–अण्डा। **आसा०**–अमला, आमलकी। **गारो०**–अम्बरी। **ता०**–नेल्लिमरं, नेल्लिकाय। **ब्रह्मा०**–शब्जु, जिफिचूसी। **फा०**–आमलज, आमलज् आमलय, आमलह, आमलाह, आम्लज्ञ। **अ०**–आमलज्ज। **अं०**–Emblic Myrobalan (एम्ब्लिक् मैरोबेलन्); Indian gooseberry (इन्डियन गूसबेरी)। **ले०**–Phyllanthus emblica Linn. (फाइलेन्थस एम्ब्लिका); Emblica officinalis Gaertn. (एम्ब्लिका ऑफिसिनेलिस्)। Fam. Euphorbiaceae (यूफर्बियेसी)।

आमला भारतवर्षके प्रायः सब उष्ण प्रदेशों में बागी और जंगली दोनों प्रकार का पाया जाता है। विशेष कर उत्तर भारत, अवध, बिहार और पूर्वी देशों में इसकी उपज अधिक है। हिमालय पहाड़ के नीचे जम्बु से पूर्व की ओर तथा दक्षिण की ओर सिलोन तक उत्पन्न होता है। तथा चीन एवं मलयद्वीप में भी मिलता है।

इसका वृक्ष–मध्यमाकार का सुहावना होता है, किन्तु जंगली वृक्ष ऊँचे कद का बड़ा होता है। छाल–चौथाई इञ्च मोटी हलके खाकी रङ्गकी एवं छिलकेदार होती है। लकड़ी–लाल रङ्गकी और मजबूत होती है। इसमें सार भाग नहीं होता है। **पत्ते**–छोटे २ इमली के पत्तों के समान और **फूल**–लाई के दानों के समान हरापन युक्त पीले रङ्ग के गुच्छों में शाखाओं से सटे रहते हैं। वसन्त ऋतु में जब इसके पुराने पत्ते झड़ जाते हैं तब वृक्ष पत्रशून्य दिखाई पड़ता है। उसी समय यह फूलता है और नवीन पत्ते निकलते हैं। फूलों में नीबू के फूल के समान मन्द सुगन्ध आती है। **फल**–डालियों में सटे हुये दिखाई देते हैं। वे गोल चमकदार और छ रेखाओं से युक्त होते हैं। कच्ची अवस्था में हरे, पकने पर हरापन युक्त किञ्चित् पीले या सुर्ख और सूखने पर काले रङ्ग के होकर फांकें पृथक् २ हो जाती हैं और साथ ही गुठली भी फट जाती है। उनसे त्रिकोणाकार छोटे २ बीज निकलते हैं। बीजों से तेल निकलता है।

बीज से ही इसके पौधे उत्पन्न होते हैं और थोड़े ही यत्न से साधारण वृक्षों की भांति प्रायः दुमट मिट्टी में इसके वृक्ष सतेज होते हैं। प्रायः वाटिकाओं में कलमी आमले के वृक्ष रोपित किये जाते हैं। जङ्गली के फल एक तोले तक और बागी कलमी आंवले के पांच तोले से अधिक भी देखने में आते हैं। बनारसी आंवले सर्वोत्तम समझे जाते हैं। किन्तु जितने आंवलों की यहां खपत होती है उतने उत्पन्न नहीं होते। खटिक लोग दूसरी जगह से मँगाकर बेचते हैं। पके फल बहुत कम मिलते हैं। प्रायः कच्ची अवस्था में ही तोड़कर बेंच लेते हैं।

रासायनिक संगठन—रासायनिक दृष्टि से इसके टैनिन में गैलिक एसिड, एलाइगिक एसिड और ग्लूकोज होता है। इसमें विटामिन 'सी' तथा पेक्टिन बहुत अधिक मात्रा में पाया जाता है। 'विटामिन सी' की मात्रा १०० ग्रा० में ६००–९२१ मि० ग्रा० तक पाई जाती है। आंवला के सूखे चूर्ण में भी 'विटामिन सी' पर्याप्त मात्रा में होती है क्योंकि इसके अन्दर का टैनिन 'सी' को नष्ट नहीं होने देता।

गुण और प्रयोग—आंवला एक अत्यंत महत्त्व की औषधि है। इसका बहुत अधिक प्रयोग किया जाता है। इसका ताजा फल रसायन, वृष्य, रक्तपित्त को दूर करने वाला, शीतल, मृदु विरेचक, मूत्रल एवं यकृत् की क्रिया ठीक करने वाला है। इसका सूखा फल ग्राही, शीतल, दीपन, एवं रक्तस्रावरोधक है।

रसायन के लिये एक विशिष्ट प्रकार की विधि से सेवन करने का विधान चरक में किया गया है। ताजे सूखे आंवले के चूर्ण को लेकर उसको ताजे आंवले के रस की भावना देकर सुखाना चाहिए। वह जितनी अधिक बार दी जायेगी उतना ही गुणकारक होगा। कम से कम २१ भावना

देकर सुखाकर रखना चाहिये। इस चूर्ण की ३ से ६ माशा की मात्रा गोघृत तथा मधु (असमान मात्रा) के साथ दिन में दो बार लेनी चाहिये। इसी प्रकार च्यवनप्राश का भी उपयोग किया जा सकता है। इसके सेवन से शरीर की सभी क्रियाएँ सुधरकर शरीर पुष्ट एवं बलवान् बनता है। स्मृति, मेधा, कांति बढ़ती है। श्वास, कास, क्षय, पांडु, अग्निमान्द्य, वीर्य दोष, आदि दूर होते है। आंवला एवं हलदी का क्वाथ बस्तिशोथ एवं पित्त प्रकोपजन्य व्याधि में उपयोगी है। आंवले का रस मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, पित्तजशूल, कामला, हिक्का, वमन, जीर्ण विबन्ध में मिश्री मिलाकर शर्बत के रूप में बहुत लाभदायक है। प्रशीताद (Scurvy) रोग में भी यह बहुत उपयोगी है। आंवले का चूर्ण अर्श, अतिसार, संग्रहणी, अत्यार्तव एवं प्रतिश्याय में उपयोगी है।

पेड़ पर ही लगे हुये आंवलों को चीरने से जो रस निकलता है उससे आंख धोने से अक्षिशोथ दूर होता है। उसी प्रकार इसके बीजों की मींगी के क्वाथ से आंख धोने से आंखों का दर्द दूर होता है। अक्षिप्रक्षालन के लिये रातभर जल में भिगोये आंवले के चूर्ण का पानी भी उपयोगी है। लोह भस्म के साथ आंवले का उपयोग पाण्डु, कामला में विशेष लाभकर होता है।

आंवले के पत्तों का क्वाथ मुख व्रण में लाभदायी है। इसके कोमल पत्तों को छाछ के साथ देने से अजीर्ण और अतिसार में लाभ होता है।

आंवले का बस्तिप्रदेश पर लेप मूत्रावरोध में, एवं गर्भाशय मुख पर रक्त प्रदर में उपयोगी है। आंवले का विशेष उपयोग च्यवनप्राश, आमलकीरसायन, त्रिफला एवं धात्री लौह में किया गया है।

मात्रा—चूर्ण ३ माशे से १ तोला तक।

३४१. आमलकी

परिचय

गण—वयःस्थापन, विरेचनोपग (च०); त्रिफला, परूषकादि (सु०)।

कुल—एरण्ड-कुल (युफॉर्बिएसी-Euphorbiaceae)।

नाम—लै०-एम्ब्लिका ऑफिसिनेलिस (Emblica officinalis Gaertn.) सं०-आमलकी, धात्री, हि०-आँवला; बं०-आमलकी, आमला; म०, गु०-आँवला; ता०-नेल्लिकाई; ते०-उशीरिकई; कन्न० मल०-नेल्लि; फा०-आम्लज, आमलः; अं०-एम्ब्लिक मिरोबेलन (Emblic myrobalan)।

स्वरूप—इसका **वृक्ष** मध्यम प्रमाण का २०-२५ फुट ऊँचा होता है। काण्डत्वक् हरिताभ धूसर, पतली, पत्तं छोड़ती हुई होती है। पत्रदंड लम्बा, **पत्र**-आयताकार, पंखवत् व्यवस्थित, इमली के पत्तों की तरह होते हैं। पुष्पदण्ड लम्बा होता है जिसमें छोटे, पीतवर्ण **पुष्प** गुच्छों में लगते हैं। **फल**-गोलाकार, ½-१ इञ्च व्यास का, मांसल, पीताभ हरित पकने पर रक्ताभ होते हैं जिनके बाह्य पृष्ठ पर छः रेखायें छः खण्डों के द्योतक होती हैं। भीतर षट्कोण बीज होता है। पुष्प फरवरी-मई में तथा फल अक्टूबर से अप्रिल तक मिलते हैं। मार्च-अप्रिल में पत्तियाँ आ जाती हैं।

जाति—वन्य और ग्राम्य भेद से आँवला दो प्रकार का होता है। वन्य आँवला छोटा, कठिन, अष्ठिल तथा ग्राम्य आँवला, बड़ा, मृदु और मांसल होता है।

उत्पत्तिस्थान—भारत में सर्वत्र ४५०० फीट की ऊँचाई तक होता है।

रासायनिक संघटन—इसके फल में गैलिक एसिड, टैनिक एसिड, निर्यास, शर्करा, अलब्युमिन, सेल्युलोज तथा खनिज द्रव्य (मुख्यतः कैलशियम) होते हैं। इसमें विटामिन सी प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। विटामिन सी का यह सर्वोत्तम वानस्पतिक स्रोत है। आमलकी-स्वरस में नारंगी के रस से २० गुना अधिक

विटामिन सी होता है। फल के कल्क और स्वरस में क्रमशः ७२० और ६२१ मि० ग्रा० प्रति १०० ग्रा० पाया गया है। इसमें अन्य घटक निम्न प्रकार से है :—

आर्द्रता ८१·२, प्रोटीन ०·५, वसा ०·१, खनिज द्रव्य ०·७, सूत्र ३·४, कार्बोहाइड्रेट १४·१, कैलशियम ०·०५, फास्फोरस ०·०२ प्रतिशत; लौह १·२ मि० ग्रा०, निकोटिनिक एसिड ०·२ मि० ग्रा० प्रति १०० ग्राम। टैनिन फल में २८, शाखात्वक् २१, काण्डत्वक् ८·६ तथा पत्र में २२ प्रतिशत होता है। फल में दो टैनिन होते हैं एक जलीय विश्लेषण के बाद गैलिक एसिड, इलेगिक एसिड तथा ग्लुकोज और दूसरा इलेगिक एसिड और ग्लुकोज में परिणत होता है। बीजों से भूरे पीले रंग का एक स्थिर तैल (१६%) निकलता है।

गुण

गुण—गुरु, रूक्ष, शीत
रस—पञ्चरस (लवणरहित), अम्लप्रधान
विपाक—मधुर
वीर्य—शीत

कर्म

दोषकर्म—यह त्रिदोषहर है। अम्ल से वात, मधुर-शीत से पित्त तथा रूक्ष-कषाय से कफ का शमन करता है।[1] विशेषतः पित्तशामक है।

संस्थानिक कर्म-बाह्य—यह दाहप्रशमन, चक्षुष्य और केश्य है।

आभ्यन्तर-नाडीसंस्थान—मेध्य, नाडियों के लिए बल्य तथा इन्द्रियों की शक्ति का वर्धक है।

पाचनसंस्थान—रोचन, दीपन, अनुलोमन, अम्लतानाशक और यकृदुत्तेजक है। अल्पमात्रा में स्तम्भन तथा बड़ी मात्रा में स्रंसन है।

रक्तवहसंस्थान—हृद्य और शोणितस्थापन है।

श्वसनसंस्थान—कफघ्न है।

प्रजननसंस्थान—वृष्य और गर्भस्थापन है।

मूत्रवहसंस्थान—मूत्रल और प्रमेहघ्न है।

त्वचा—कुष्ठघ्न है।

तापक्रम—ज्वरघ्न और दाहप्रशमन है।

सात्मीकरण—रसायन है।

प्रयोग

दोषप्रयोग—यह तीनों दोषों से उत्पन्न विशेषतः पैत्तिक विकारों में प्रयुक्त होता है।

---

१. हन्ति वातं तदम्लत्वात् पित्तं माधुर्यशैत्यतः।
कफं रूक्षकषायत्वात् फलं धात्र्यास्त्रिदोषजित्॥ (भा. प्र.)

संस्थानिक प्रयोग-बाह्य—दाह, पैत्तिक शिरःशूल तथा मूत्रावरोध में इसका लेप करते हैं। नेत्ररोगों में इसका स्वरस डालते तथा लगाते हैं। खालित्य और पालित्य रोगों में आँवले से सिर धोते हैं।

आभ्यन्तर-नाडीसंस्थान—मस्तिष्कदौर्बल्य, दृष्टिमांद्य आदि इन्द्रियदौर्बल्य में यह प्रयुक्त होता है।

पाचनसंस्थान—अरुचि, अग्निमांद्य, विबन्ध, यकृद्विकार, अम्लपित्त, परिणामशूल, उदावर्त्त, उदररोग तथा अर्श में देते हैं।

रक्तवहसंस्थान—हृद्रोग, रक्तपित्त, रक्तविकार में प्रयुक्त होता है।

श्वसनसंस्थान—कास, श्वास, यक्ष्मा में इसका प्रयोग करते हैं।

प्रजननसंस्थान—शुक्रमेह तथा प्रदर और गर्भाशयदौर्बल्य में उपयोगी है।

मूत्रवहसंस्थान—मूत्रकृच्छ्र तथा पैत्तिक प्रमेहों में ताजे आँवले का रस पिलाते हैं।

त्वचा—कुष्ठ, विसर्प आदि चर्मरोगों में प्रयुक्त होता है।

तापक्रम—जीर्णज्वर, तृष्णा, दाह आदि में आँवला लाभकर है।

सात्म्यीकरण—दौर्बल्य, क्षय, शोथ में प्रयुक्त होता है।

प्रयोज्य अंग—फल।

मात्रा—स्वरस-१०-२० मिलि०; चूर्ण—३-६ ग्रा०

विशिष्ट योग—च्यवनप्राश, ब्राह्मरसायन, धात्रीलौह, धात्रीरसायन।

× × ×

'हरीतकीसमं धात्रीफलं किन्तु विशेषतः। रक्तपित्तप्रमेहघ्नं परं वृष्यं रसायनम्॥
(भा. प्र.)

'विद्यादामलके सर्वान् रसान् लवणवर्जितान्।' (च. सू. २७.)

'तान् गुणांस्तानि कर्माणि विद्यादामलकीष्वपि।
यान्युक्तानि हरीतक्या वीर्यस्य तु विपर्ययः॥' (च. चि. ३.)

'अम्लं समधुरं तिक्तं कषायं कटुकं सरम्। चक्षुष्यं सर्वदोषघ्नं वृष्यमामलकीफलम्।
हन्ति वातं तदम्लत्वात्पित्तं माधुर्यशैत्यतः। कफं रूक्षकषायत्वात्फलेभ्योऽभ्यधिकं च तत्॥'
(सु. ४६.)

'कटुमधुरकषायं किंचिदम्लं कफघ्नम् रुचिकरमतिशीतं हन्ति पित्तास्रतापम्।
श्रमशमनविबन्धाध्मानविष्टम्भदोषप्रशमनममृताभं चामलक्याः फलं स्यात्॥'
(रा. नि.)

W. I., iii, 168–70.
B. N. Singh. D. Ay. M. thesis, B. H. U., 1969.

गुण-दोष–

धन्वन्तरि निघण्टु के अनुसार– आमलकी कषाय, कटु एवं तिक्त रस प्रधान, उष्ण वीर्य, स्वादिष्ट तथा शीतल है। आमलकी के फल का रस त्रिदोष को दूर करता है, वीर्यवर्द्धक है, ज्वर नाशक है तथा रसायन है। यह अम्ल होने से वात का नाश करता है, मधुर तथा शीतल होने से पित्त का नाश करता है और रूक्ष तथा कषाय होने से कफ का नाश करता है। इस प्रकार आंवला का फल तीनों दोषों को दूर करता है।

राज निघण्टु के अनुसार– आंवला कषाय, अम्ल एवं मधुर रस प्रधान है, शीतल तथा लघु है। यह दाह, पित्त-विकार एवं वमन, प्रमेह एवं शोथ का नाश करता है और रसायन है। प्रकारान्तर से यह कटु, मधुर, कषाय तथा थोड़ा अम्ल है और कफनाशक है। यह रुचिकारक तथा अत्यन्त शीतल है और पित्त विकार, रक्त विकार तथा ताप का नाश करता है। इनके अतिरिक्त थकावट, वमन, विबन्ध, आध्मान, विष्टम्भ दोष को शान्त करता है और आवंला का फल अमृत के समान गुणकारक होता है।

भावप्रकाश के अनुसार– आंवला का गुण हरीतकी फल के समान होता है किन्तु आंवला विशेषकर रक्तपित्त तथा प्रमेह को नष्ट करता है, उत्तम वीर्यवर्द्धक है तथा रसायन है। आंवला का फल अम्ल होने से वात रोग को नष्ट करता है, मधुर तथा शीतल होने से पित्त को शान्त करता है, रूक्ष तथा कषाय रस होने से कफ का नाश करता है। इस प्रकार आंवला का फल त्रिदोष को शान्त करता है। जिस फल का जो वीर्य होता है उसके मज्जा का भी वही वीर्य होता है ऐसा निर्देश है।

राजवल्लभ के अनुसार– आमलकी का फल भोजन के पहले, मध्य में तथा अन्त में प्रशस्त होता है यह बढ़े हुए दोषों को दूर करता है।

वैद्यकशास्त्र में आंवला का उपयोग- आंवला के रस का घी में मिलाकर प्रयोग करें। जिसका कोष्ठ

(१) विसर्प ज्वर में आंवला का प्रयोग- (कोठा) भारी हो उसके लिए आंवला के रस का घी तथा निशोथ मूल का चूर्ण मिलाकर प्रयोग करें (च.चि.अ. ११)। **(२) हिक्का में आंवला का प्रयोग-** हिचकी में आंवला तथा कैथ के रस में पीपर का चूर्ण तथा मधु मिलाकर प्रयोग करें (च.चि.अ.१२)। **(३) श्वेतप्रदर में आमलकी बीज का प्रयोग-** जल के साथ आंवला के बीज को पीसकर कल्क बनावे और उसमें शक्कर तथा मधु मिलाकर प्रयोग करें अथवा शहद के साथ आंवला का चूर्ण या मिश्री मिलाकर प्रयोग करें (च.चि.अ.३०)।

(१) अर्श रोग में आंवला का प्रयोग- पूर्वोक्त प्रकार से अर्श रोग में आंवला तथा गुडूची के रस में तक्रकल्प का प्रयोग करें (सु.चि.अ.६)। **(२) वात रक्त में आमलक का प्रयोग-** सभी प्रकार के वात रक्त में पुराना घृत में आंवला को पकाकर पीने के लिए दें (सु.चि.अ.०५)। **(३) प्रमेह में आमलक का प्रयोग-** प्रमेह रोग में बढ़े धनवान व्यक्ति सांवां, तीना के चावल के साथ आंवला फल का आहार करें तथा मूंगों के साथ रहें (सु.चि.अ. ६)। **(४) मूत्ररोग दोष में आंवला के रस का प्रयोग-** अच्छी तरह कूट, पीसकर आंवला का रस एक कुडव (२५० ग्राम) निकालकर मूत्र दोष से पीड़ित व्यक्ति पान करे (सु.उ.अ.५८)।

(१) कास में आंवला का प्रयोग- कास से पीड़ित व्यक्ति आंवला के चूर्ण का क्षीर पाक (दूध में पकाकर) तथा घृत मिलाकर सेवन करे (वाग्भट चि.अ.२)। **(२) प्रमेह में आमलक का प्रयोग-** प्रमेह में आंवला के रस का प्रयोग करे (वा.चि.अ.१२)।

(१) रक्तपित्त में आंवला का प्रयोग- आंवला फल को पकाकर तथा महीन पीठी बनाकर सेवन करने से नासिका से निकलते हुए खून को रोक देता है जैसे पुल जल के वेग को रोक देता है अथवा सिर पर लेप करने से रक्त पित्त के वेग को रोक देता है (चक्र.रक्त.चि.)। **(२) पित्त शूल में आंवला का प्रयोग-** पैत्तिक शूल में आंवला के रस को शक्कर मिलाकर पान करे। यह शीघ्र ही पित्तजन्य शूल को नष्ट करता है (चक्र. शूल चि.)। **(३) शीत पित्त में आमलक का प्रयोग-** शीत पित्त में गुड़ के साथ आंवला का प्रयोग करे (चक्र.उदर चिकित्सा)।

(१) मूत्रग्रह में आमलक का प्रयोग- मूत्र निग्रह में (मूत्र रुकने पर) आंवला कल्क से बस्ति भाग पर लेप करे। इससे शीघ्र ही मूत्रग्रह शान्त होता है (भाव प्रकाश)। **(२) योनि दाह में आंवला का प्रयोग-** योनिदाह में आंवला के रस में मिश्री मिलाकर हमेशा पान करे (भा.प्रका.योनिदाह चि.)।

(१) वातज छर्दि (वमन) में आंवला का प्रयोग- आंवला के रस के साथ चन्दन को घिस कर तथा मधु मिलाकर गुटिका बनावे। यह गुटिका चाटने से वमन अवश्य ही शान्त होता है (हा.चि.अ.१३)। **(२) शिर के क्षत होने पर आंवला के रस का प्रयोग-** आंवला के फल को पीस कर उसमें घी तथा मिश्री मिलाकर लेप करने से मस्तक क्षत तथा सिर की वेदना शान्त होती है (हा.चि.४२)।

(१) रक्त युक्त मूत्र कृच्छ्र में आंवला का प्रयोग- रक्तयुक्त मूत्र कृच्छ्र में आंवला का या गन्ना का रस मधु मिलाकर पान करे (वं.से. मूत्रकृच्छ्राधिकारः)। **(२) नवीन नेत्र प्रकोप (नेत्र की लालिमा) में आंवला फल का प्रयोग-** आंवला के फल का रस आँख में डालने से नवीन नेत्र कोप (आंख का आना) को नष्ट करता है। (वं.से.नेत्र चि.) **(३) बच्चों के चिच्चिड़ नामक रोग में आंवला का प्रयोग-** आंवला का चूर्ण आठ पल (४०० ग्रा) लेकर सात बार गोमूत्र में भावित करे। भावना देकर धूप में सुखा दे। इसके बाद बच्चों के चिच्चिड़ रोग में लेप करे। इससे चिच्चिड़ नामक रोग शान्त होता है (वं.से.बाल रोग.चि.)।